बहुत मेहनती मकड़ी

एरिक कार्ल

बहुत मेहनती मकड़ी

एक दिन सुबह के समय हवा एक मकड़ी को खेत से बहाकर लाई. मकड़ी के शरीर से एक पतला रेशमीन धागा लटक रहा था. खेत ख़त्म होने के बाद मकड़ी एक लकड़ी की बाड़ पर आकर गिरी.

...वो तुरंत रेशम के धागे से अपना जाल बुनने लगी.

"हिन-हिन!" घोड़े के कहा. "क्या तुम मुझ पर सवारी करोगे??"

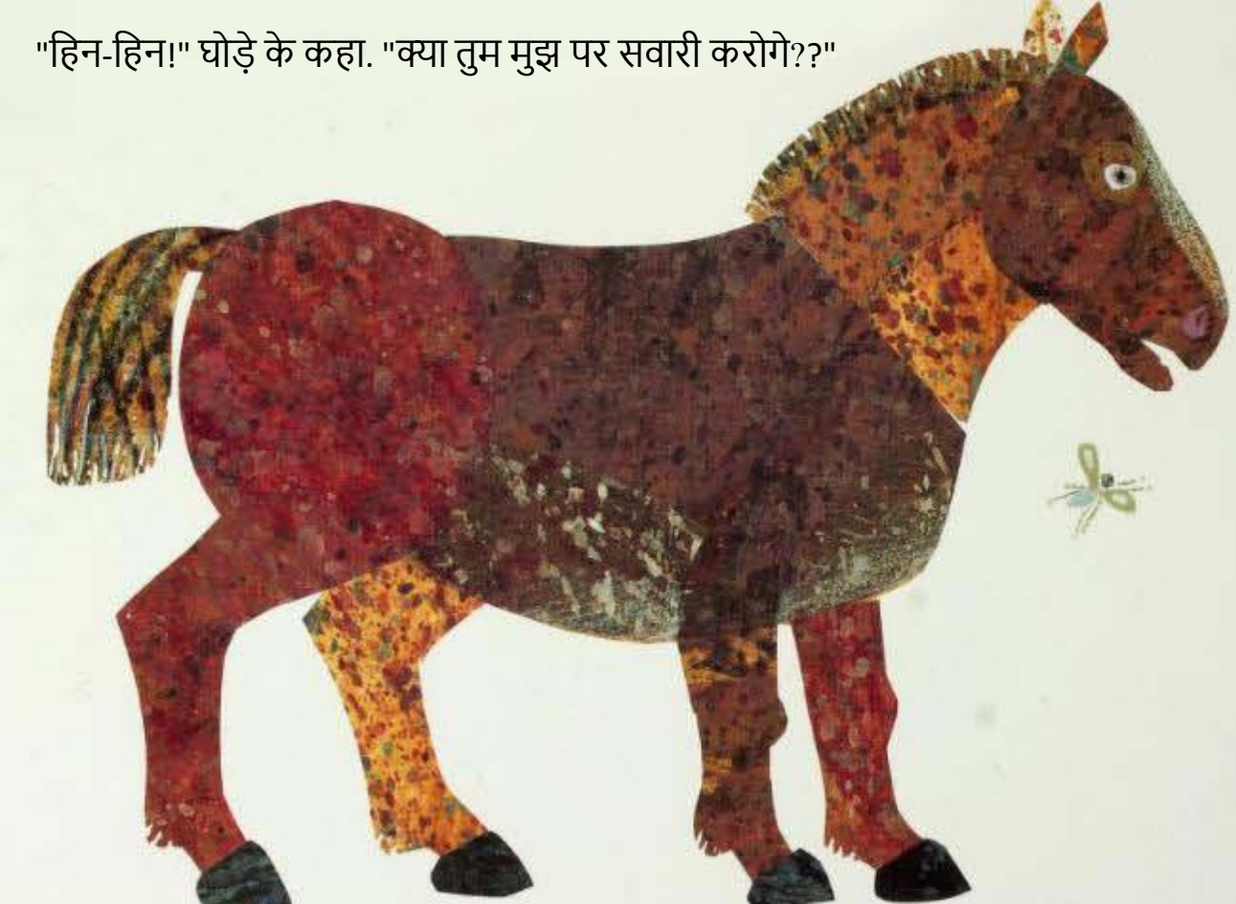

पर मकड़ी ने कोई जवाब नहीं दिया. वो अपना जाल बुनने में बहुत व्यस्त थी.

"मू-मू!" गाय के कहा. "क्या तुम कुछ घास खाओगे?"

पर मकड़ी ने कोई जवाब नहीं दिया. वो अपना जाल बुनने में बहुत व्यस्त थी.

"बा!-बा!" भेड़ के कहा. "क्या तुम मेरे साथ घास में दौड़ोगे?"

पर मकड़ी ने कोई जवाब नहीं दिया. वो अपना जाल बुनने में बहुत व्यस्त थी.

"मा!-मा!" बकरी ने कहा. "क्या तुम मेरे साथ पत्थरों पर कूदोगे?"

पर मकड़ी ने कोई जवाब नहीं दिया. वो अपना जाल बुनने में बहुत व्यस्त थी.

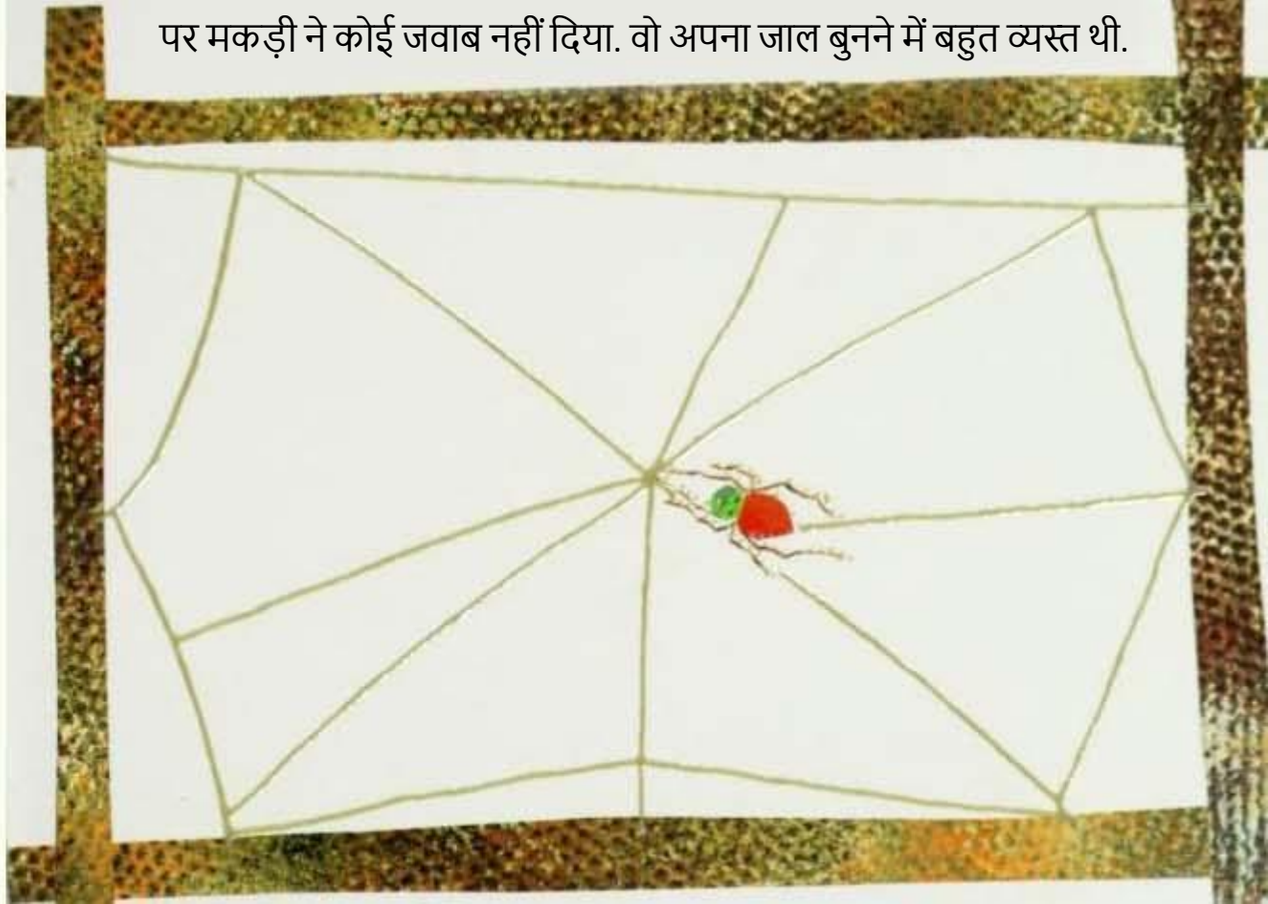

"ओइनक!-ओइनक!" सुअर ने कहा. "क्या तुम मेरे साथ कीचड़ में लोटोगी?"

पर मकड़ी ने कोई जवाब नहीं दिया. वो अपना जाल बुनने में बहुत व्यस्त थी.

"भौं!-भौं!" कुत्ते ने कहा. "क्या तुम बिल्ली को दौड़ना चाहोगी?"

पर मकड़ी ने कोई जवाब नहीं दिया. वो अपना जाल बुनने में बहुत व्यस्त थी.

"मियाऊं!-मियाऊं!" बिल्ली ने कहा. "क्या तुम सोना चाहोगी?"

पर मकड़ी ने कोई जवाब नहीं दिया. वो अपना जाल बुनने में बहुत व्यस्त थी.

"क्वेक!-क्वेक!" बत्तख ने कहा. "क्या तुम तैरना चाहोगी?"

पर मकड़ी ने कोई जवाब नहीं दिया. वो अपना जाल बुनने में बहुत व्यस्त थी.

"कुकड़ू-कूं!-कुकड़ू-कूं!!" मुर्गे ने कहा. "क्या तुम एक मक्खी को पकड़ना चाहोगी?"

फिर मकड़ी ने झट से मक्खी को अपने जाल में पकड़ लिया....एकदम झट से!

"हूट? हूट? उल्लू ने पूछा। "इतना सुन्दर जाल किसने बनाया है?"

लेकिन मकड़ी ने कोई जवाब नहीं दिया.

उसके लिए वो बहुत ही व्यस्त दिन था.